24

छन्द

संस्कृत जगत में प्राय: सर्वत्र छन्दों का प्रयोग देखा जाता है। श्लोकादि का निर्माण तो छन्द के बिना संभव ही नहीं है। छन्द से रचित पद्य अधिक सौन्दर्य को धारण करते हैं। अतएव संस्कृत जगत छन्दोमय है इसमें कोई सन्देह नहीं है। काव्य नाटक आदि लौकिक शास्त्रों में छन्दों का प्रचुर प्रयोग देखा जाता है। न केवल लौकिक साहित्य में अपितु वैदिक साहित्य में भी बहुत अधिक प्रयोग देखा जाता है। केवल यजुर्वेद ही गद्य है। शेष तीनों संहिताएं पद्यमय है। तीनों वेदों में त्रिष्टुप् आदि छन्द से मन्त्रों की रचना की गई है। छन्द सहित मन्त्र अधिक समय तक स्मरण में रहते हए सौन्दर्य को धारण करते हैं प्राचीन शास्त्रकारों ने वेदान्तादि शास्त्र ग्रन्थ भी अनुष्टुप आदि छन्दों से रचित थे। संस्कृत जगत में सर्वप्रथम सर्व रचनाएं पद्यमय ही थीं। लौकिक काव्यादि में भी लौकिक छन्द का प्रयोग दिखाई देता है। वसन्ततिलका आदि छन्द से रचित श्लोक अधिक मनोग्राही होता है। कालिदास आदि महाकवि तो छन्द से पद्य निर्माण करने में अतीव पटु थे। कुछ कवियों ने तो एक दो छन्दों का आश्रय लेकर सम्पूर्ण ग्रन्थ की रचना कर दी। छन्द के बिना संस्कृत जगत अन्धकारमय ही है। काव्यों में छन्द की अत्यधिक आवश्यकता अनुभव की जाती हैं। प्रकृतपाठ में कुछ प्रसिद्ध छन्दों के लक्षणों व उदाहरणों की समालोचना करेंगे।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़कर आप सक्षम होंगे :

- विविध छन्दों के लक्षण जान पाने में;
- छन्दों को उदाहरणों में समन्वय कर पाने में;
- काव्यों में विविध स्थलों पर छन्दों का निर्णय कर पाने में और
- छन्दों के भेद-उपभेदों का ज्ञान प्राप्त कर पाने में।

टिप्पणी

24.1 मात्रिक छन्द

मात्रिक छन्द में मात्राओं की गणना की जाती है प्रत्येक गण में चार मात्राएं होती हैं इस छन्द में मात्रा का अधिक महत्व दिखाई देता हैं यहाँ अक्षर या वर्णों की गणना नहीं होती है। यहां पर मान्त्रिक छन्द में केवल आर्या का वर्णन किया गया है।

24.1.1 आर्या छन्द

यह मात्रिक छन्द है अर्थात् मात्राओं की गणना होती है। प्रत्येक गण में चार मात्राएं होती हैं। आर्या का सामान्य लक्षण-

लक्ष्मैतत्सप्त गणा गोपेता भवति नेह विषमे जः।
षष्ठोखयं नलघू वा प्रथमेखर्धे नियतमार्यायाः॥
षष्ठे द्वितीय लात्परके न्ले मुखलाच्च सयति पदनियम :।
चरमेखर्धे पञ्चमके तस्मादिह भवति षष्ठोलः॥

अन्वय :- आर्यायाः प्रथमें अर्धे सतत् लक्ष्म नियतम् (अस्ति) गोपेताः सप्त गणा (भवन्ति), इह विषमे जः न भवित, षष्ठः अयम् (जः भवित), वा न लघु (भवतः)। न षष्ठे न्ले द्वितीय लात् (पूर्वम्) परके (न्ले) मुखलात् (पूर्वम्) सयति पद नियमः। चरमे अर्धे (एतत् लक्ष्य नियतम्) पञ्चमके (न्ले) तस्मात् (सयतिपद नियमः) इह षष्ठो लः भवति।

व्याख्या :- आर्या छन्द के प्रथमार्ध में प्रथम द्वितीय चरणों यह उच्चमान लक्षण निश्चित हैं वह लक्षण क्या है ? तब कहते हैं। गुरू के साथ सात संख्या के गण हैं। इस आर्या के विषम गण में (प्रथम तृतीय पञ्चम व सप्तम) जगण नहीं होता हैं षष्ठस्थान पर जगण होता हैं अथवा षष्ठ में नगण के साथ एक लघुस्वर होता है। अब यति के नियम को कहते है। यदि षष्ठस्थानक गण में लघुस्वर के साथ नगण होता है तो षष्ठस्थानक गण में चारों लघुसंज्ञायुक्त अक्षर होते हैं। वहां चारों लघु रूप षष्ठ गण का तो द्वितीय लघु के पूर्व अर्थात् प्रथम लघु में यति होती हैं। इस प्रकार षष्ठगण के प्रथम लघु में ही पद की समाप्ति होती है। पुनः यदि सप्तमस्थानक गण में यदि चारों लघुसंज्ञक युक्त अक्षर होते है तो चारों लघु रूप सप्तम गण के प्रथम से लघु के पूर्व अर्थात् षष्ठगण के अन्तिम अक्षर पर यति और पद समाप्ति होती हैं यति शब्द का अर्थ यदि और पदसमाप्ति दोनों कार्य होते हैं। इस प्रकार पूर्वार्ध लक्षण और यति पद का नियम है।

अब द्वितीयार्ध का लक्षण कहते है- उत्तरार्ध तृतीय चतुर्थ पाद में पञ्चमस्थानक गण में चारों लघु संज्ञायुक्त अक्षर होते हैं। यदि पञ्चमगण के प्रथम लघु के पूर्व अर्थात् चतुर्थगण के अन्तिम अक्षर पद पर समाप्ति होनी चाहिए। पुनः षष्ठ स्थानवर्ती गण एक लघु रूप होता हैं षष्ठगण की एक लघु रूपता ही उत्तरार्ध को पूर्वार्ध से विशेषता, अवशिष्ठ सब तो पूर्वार्ध के समान होंगे। इस प्रकार पूर्वार्ध में 30 मात्रा और उत्तरार्ध में 27 मात्राएं होंगी। यह आर्या छन्द मात्रिक छन्दों में विषमवृत्त है। इसके प्रत्येक चरण में भिन्न-भिन्न अक्षर होते हैं।

उदाहरण – ।।। ।, । ऽ ।, ऽ ऽ ऽ ।।, ऽ ऽ,।।।।, ।। ऽ,ऽ

सुभग स लिलावगाहा, पाटल संस र्गसुरभि वनवाताः

ऽ ऽ , । । । ।, ऽ ऽ । । ऽ , । ।, ऽ, । ।। ऽ, ऽ

प्रच्छा यसुलभ निद्रा, दिवसाः परिणा म रमणी याः

उदाहरण में लक्षण समन्वय – प्रथम अर्ध के प्रथम द्वितीय चरणों में अन्त में स्थित गुरू वर्ण के साथ सात गण हैं इस प्रकार विषम गण में (प्रथम, तृतीय, पञ्चम, एवं सप्त गण में) जगण नहीं है। षष्ठ गण में लघु स्वर के साथ नगण हैं अर्थात् षष्ठस्थानक गण में चारों लघु संज्ञक अक्षर हैं। अतएव चारों लघु रूप षष्ठ के द्वितीय के (सु के) पूर्व अर्थात् प्रथम लघु में (ग में) यति होती हैं इसी प्रकार षष्ठगण के प्रथम लघु में गकार में ही पद समाप्ति होती हैं उत्तरार्ध का भी तृतीय और चतुर्थ चरणों के अन्त में स्थित गुरू वर्णन के साथ सात गण विद्यमान हैं। उत्तरार्ध के विषय गण में भी जगण नहीं है। षष्ठस्थानक गण में एक लघुता विद्यमान है। पंचम स्थान में चारों लघुता अक्षर नहीं है। अतः इस श्लोक में लक्षणोंक्त यति नियम प्रवर्तत नहीं होता। इस श्लोक के पूर्वार्ध में 30 मात्रा और उत्तरार्ध में 27 मात्राएं विद्यमान है। यह आर्याछन्द मात्रिक छन्दों में विषमवृत है।

पाठगत प्रश्न 24.1

1. आर्या छन्द मात्रिक है या वर्णिक?
2. आर्या छन्द के विषम गण में कौन सा गण नहीं होता?
3. आर्या छन्द मात्रिक में समवृत्त है या विषमवृत?
4. आर्या छन्द के पूर्वार्ध में कितनी मात्रा होती हैं?
5. आर्या छन्द के उत्तरार्ध में कितनी मात्रा होती हैं?

24.2 वर्णिक छन्द

मात्रिक छन्दों का वर्णन करके अब वर्णिक छन्दों का वर्णन करते हैं। इसमें वर्णों की गणना होती है मात्राओं की नहीं। प्रत्येक गण में तीन अक्षर होते है। इस पाठ में केवल वर्णिक छन्दों में समवृत्त छन्द की चर्चा विहित हैं समवृत्त नामक छन्द के प्रत्येक चरण में समान अक्षर होते हैं।

24.2.2 इन्द्रवज्रा

अधिकांश पद्य अनुष्टुप छन्द से रचे गये है इसमें कोई सन्देह नहीं है। अनुष्टुप को छोड़कर अधिकांश पद्य इन्द्रवज्रा छन्द से रचित दिखाई देते हैं। इस छन्द से श्लोक निर्माण अत्यन्त सरल

टिप्पणी

है। और सुनने में भी कानों को मधुरता प्रदान करता हैं अतएव कवियों ने इस छन्द से बहुत अधिक श्लोक की रचना की है।

लक्षण :- ''स्यादिन्द्रवज्रा यदि तौ जगौ गः''।

यह इन्द्रवज्रा छन्द त्रिष्टुप् छन्द का ही भाग है। यह समवृत्त छन्द है। क्योंकि इसके चारों पादों में समान अक्षर व लक्षण होते हैं। इसके प्रत्येक चरण में दो तगण,एक जगण और अन्त में दो गुरू होते हैं। इसके प्रत्येक चरण में ग्यारह वर्ण होते है।

उदाहरण में लक्षण समन्वय

ऽ ऽ ।, ऽ ऽ ।,। ऽ ।, ऽ ऽ ऽ ऽ ।, ऽ ऽ ।, । ऽ ।, ऽ ऽ

गोष्ठेगि रिं सव्य करेण धृत्वा, रूष्टेन्द्र वज्राह मि मुक्त वृष्टौ ।

ऽ ऽ । , ऽ ऽ । । ऽ । ऽ ऽ , ऽ ऽ । ऽ ऽ । । ऽ । ऽ ऽ

यो गोकुलं गोप कुलं च सुस्थं, चक्रे सनो रक्षतु चक्रपाणिः ॥

इस श्लोक के प्रत्येक चरण में क्रमशः दो तगण एक जगण और दो गुरू है। इस लिए यह इन्द्रवज्रा का उदाहरण है। प्रत्येक चरण में समान गण एवं क्रम है। प्रत्येक चरण में ग्यारह है इस छन्द के पाद के अन्त में यति होती है।

24.2.2 उपेन्द्रवज्रा

लक्षणः- ''उपेन्द्रवज्रा जतजास्ततोगौ''।

उपेन्द्रवज्रा त्रिष्टुप् का भेद है इस छन्द में क्रमशः जगण, तगण, जगण और अन्त में दो गुरू होते हैं। प्रत्येक चरण में ग्यारह वर्ण होते हैं तथा पाद के अन्त में यति होती है।

उदाहरण में लक्षण समन्वय :-

। ऽ ।, ऽ ऽ ।, । ऽ ।, ऽ ऽ, । ऽ ।, ऽ ऽ ।, । ऽ ।, ऽ ऽ

जिता जगत्येष भवभ्रमस्तै, र्गुरूदितं येगिरिशं स्मरन्ति।

। ऽ ।, ऽ ऽ ।, । ऽ ।, ऽ ऽ, । ऽ ।, ऽ ऽ ।, । ऽ ।, ऽ ऽ

उपास्य मानं कमलास नाद्यै, रूपेन्द्र वज्रा युधवारि नाथैः ॥

उपेन्द्रवज्रा नामक छन्द में प्रतिचरण क्रमश जगण, तगण, जगण और अन्त में दो गुरू होते हैं। इस श्लोक में भी प्रथम जगण उसके बाद तगण उसके बाद जगण और अन्त में दो गुरू वर्ण है तथा प्रत्येक चरण में ग्यारह वर्ण है। और पाद के अन्त में यति है अतः उपेन्द्रवज्रा छन्द घटित होता है।

24.2.3 शालिनी मतौ

लक्षण :- ''शालिन्युक्ता म्तौ तगौ गोखब्धिलोकैः।''

व्याख्या :- शालिनी छन्द भी त्रिष्टुप् का भेद है। जिसके प्रत्येक चरण में मगण, तगण, तगण और अन्त में दो गुरू होते है। अम्बुधि चार होते हैं और लोक सात होते हैं। अत: शालिनी छन्द में चौथे और सातवें वर्ण के बाद यति होती है। प्रत्येक चरण में ग्यारह वर्ण होते हैं।

उदाहरण में लक्षण समन्वय-

ऽ ऽ ऽ , ऽ ऽ ।, ऽ ऽ ।, ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ, ऽ ऽ ।, ऽ ऽ ।, ऽ ऽ

अंहो हन्ति, ज्ञान वृद्धिं विधत्ते, धर्मदत्ते, कामयर्थं च सूते

ऽ ऽ ऽ, ऽ ऽ ।, ऽ ऽ ।, ऽ ऽ ऽ ऽ, ऽ ऽ ।, ऽ ऽ ।, ऽ ऽ

मुक्तिं दत्ते सर्व दोपास्य माना, पुंसां श्र.द्धाशालिनी विष्णु भक्ति:॥

इस श्लोक के प्रत्येक चरण में ग्यारह वर्ण है। इस श्लोक के प्रत्येक चरण में क्रमश मगण, तगण, तगण और अन्त में दो गुरू है। चतुर्थ एवं सप्तम अक्षर के बाद यति होती है यह लक्षण चारों चरणों में विद्यमान होने से शालिनी का लक्षण घटित होता है।

पाठगत प्रश्न 24.2

6. इन्द्रवज्रा छन्द का लक्षण क्या है?
7. इन्द्रवज्रा वृत्त के एक पाद में कितने अक्षर होते हैं?
8. इन्द्रवज्रावृत्त समवृत्त है या विषम वृत?
9. उपेन्द्रवज्रा वृत्त का लक्षण क्या है?
10. उपेन्द्रवज्रा वृत्त के एक पाद में कितने अक्षर होते हैं?
11. शालिनी वृत्त का लक्षण क्या है?
12. शालिनी वृत्त के एक पाद में कितने अक्षर होते हैं?

24.2.4 रथोद्धता

लक्षण:- ''रान्नराविह रथोद्धता लगौ ।

व्याख्या:- यह त्रिष्टुप् छन्द का कोई भेद है। जिस वृत्त के प्रत्येक पाद में क्रमश: रगण, नगण, रगण अन्त में लघु तथ गुरू वर्ण होते है। इस प्रकार प्रत्येक चरण में ग्यारह वर्ण होते है। पाद के अन्त में यति का नियम है।

उदाहरण में लक्षण समन्वय

ऽ । ऽ, ।।।, ऽ।ऽ,। ऽ ऽ । ऽ, । ।।, ऽ । ऽ, । ऽ

किंत्वया सुभट दूरवर्जितं, नात्मनो न सुहृदां प्रियंकृतम्।

टिप्पणी

ऽ । ऽ, ।।।, ऽ। ऽ, । ऽ, ऽ । ऽ, । । ।, ऽ। ऽ,। ऽ

यत्पला यनप रायण स्यते, याति धू- लिरधुनारथोद्धता ॥

प्रकृत श्लोक के प्रत्येक चरण में रगण उसके बाद नगण है उसके बाद पुन रगण और उसके बाद लघु और गुरू वर्ण हैं इस श्लोक के पादान्त में यति है। प्रकृत लक्षण के साथ इस श्लोक का अन्वय है अत: यहां रथोद्धता छन्द हैं प्रत्येक चरण में यह लक्षण घटित हो रहा है। तथा एक प्रत्येक चरण में ग्यारह अक्षर होने से कुल 44 अक्षर है। यह त्रिष्टुप् का भेद है।

24.2.5 वंशस्थ

संस्कृत साहित्य जगत में वंशस्थ छन्द का प्रचुर प्रयोग दिखाई देता है यह अत्यन्त प्रसिद्ध छन्द है। कालिदास ने इस का बहुत प्रयोग किया है। इस छन्द से रचित श्लोक में अधिक चमत्कार पैदा होता है।

लक्षण :- ''जतौ तु वंशस्थमुदीरितं जरौ।''

व्याख्या:- जगती छन्द का कोई भाग वंशस्थ वृत्त होता है। जिस वृत्त के प्रत्येक पाद में जतौ अर्थात् जगण और तगण उसके बाद जरौ अर्थात् जगण और रगण होते हैं, वह वंशस्थ के नाम से प्रसिद्ध होता है अर्थात् इसके प्रत्येक चरण में क्रमश जगण तगण, जगण और रगण होते हैं। यह समवृत्त छन्द है। अत: चारों पादों में समान लक्षण है इसके प्रत्येक पाद में 12 अक्षर होते हैं। इस प्रकार कुल 48 अक्षर होते हैं तथा पाद के अन्त में यति होती है।

उदाहरण में लक्षणान्वय

। ऽ ।, ऽ ऽ ।, । ऽ।, ऽ। ऽ, । ऽ।, ऽ ऽ ।, । ऽ । ऽ । ऽ

नमोखस्त्व नन्ताय सहस्र मूर्तये, सहस्र पादाक्षि शिरोरुबाहवे

। ऽ।, ऽ ऽ ।,। ऽ ।, ऽ । ऽ । ऽ।, ऽ ऽ ।, । ऽ।,ऽ । ऽ

सहस्र नाम्ने पुरुषाय शाश्वते, सहस्र कोटीयु गधरिणे नम:॥

इस श्लोक के प्रत्येक पाद में आदि में जगण है, उसके बाद तगण है, उसके बाद पुन जगण, और उसके बाद रगण क्रमश है। अत: यह वंशस्थ का उदाहरण है। इसके प्रत्येक पाद मे 12 वर्ण है। इस प्रकार सम्पूर्ण पद्य में 48 वर्ण है। पाद के अन्त में यति होती है।

24.2.6 तोटक

संस्कृत जगत में तोटक वृत्त कवियों को अत्यन्त प्रिय है।

लक्षण :- ''इह तोटकमम्बुधिसै: प्रथितम्।

व्याख्या- तोटक वृत्त जगती का ही कोई भेद है। यह समवृत्त छन्द है। अम्बुधि चार है। छन्दशास्त्र में अम्बुधिसै: का अर्थ है चार सगणों से युक्त होता है। वह तोटक नामक वृत्त होता है। अर्थात् जिस छन्द में चार सगण होते हैं। वह तोटक वृत्त होता है। इसके प्रत्येक पाद के

टिप्पणी

अन्त में यति होती है। इसके प्रत्येक चरण में 12 वर्ण तथा चारों पादों में कुल 48 वर्ण होते हैं।

उदाहरण में लक्षणसमन्वय -

।।ऽ, ।ऽ,।।ऽ,।।ऽ,	॥ऽ,॥ ऽ,॥ ऽ,॥ ऽ
जयराम सदासुखधम हरे,	**रधुनायक सायक चापधरे।**
॥ऽ, ॥ऽ, ॥ऽ,।।ऽ	।।ऽ,॥ ऽ,॥ ऽ,।।ऽ
भववा रणदा रणसिंह प्रभो,	**गुणसागर नागर नाथ विभो॥**

प्रस्तुत श्लोक के प्रत्येक पाद में सगण चतुष्ट्य है। इस प्रकार पादचतुष्टय समान लक्षण युक्त है क्योंकि यह समवृत्त हैं इसके प्रत्येक पाद में 12 अक्षर है। तथा चारों चरणों में कुल 48 वर्ण है। पाद के अन्त में यति है। यह वर्णिक छन्द है।

24.2.7 द्रुतविलम्बितम्-

संस्कृत साहित्य जगत में द्रुतविलम्बित वृत्त अत्यन्त प्रसिद्ध है। कालिदास आदि महाकवियों ने द्रुतविलम्बित वृत्त का आश्रय लेकर बहुत से श्लोकों की रचना की । यह समवृत्त हैं यह वृत्त श्रोताओं के कानों में माधुर्य पैदा करता है।

लक्षण- ''द्रुतविलम्बितमाह नभौ भरौ''।

व्याख्या- यह वृत्त जगती का ही कोई भेद है। यह समवृत्त है। इसके प्रत्येक पाद में नभौ अर्थात् नगण एवं भगण होता है, फिर भरौ- अर्थात् भगण और रगण होता है। अर्थात् जिस वृत्त के प्रत्येकपाद में क्रमशः नगण, भगण, भगण और रगण होते हैं वह द्रुतविलम्बित वृत्त होता है इसके प्रत्येक पाद में बारह वर्ण होते हैं और चारों पादों में कुल 48 वर्ण होते है। तथा पाद के अन्त में यति होती है यह वर्णिक छन्द है।

उदाहरण में लक्षण समन्वय-

।।।, ऽ ॥,ऽ॥, ऽ।ऽ	॥ ।, ऽ ॥, ऽ । ।, ऽ । ऽ,
द्रुतगतिः पुरुषोधन भाजनं,	**भवति मन्दगतिश्च सुखोचितः।**
॥ ।, ऽ । ।, ऽ ॥, ऽ । ऽ	॥ ।, ऽ ॥,ऽ । ।, ऽ । ऽ
द्रुत विलम्बित खेलगति र्नृपः,	**सकलराज्यसुखं प्रियमश्नुते॥**

इस प्रकार श्लोक के प्रत्येक पाद के आदि में नगण है उसके बाद भगण तथा पुन भगण व उसके बाद रगण है। अतएव इस श्लोक में द्रुतविलाम्बित का उदाहरण गृहीत होता है। यह समवृत्त है इस श्लोक के प्रत्येक पाद मे 12 अक्षर है प्रत्येक चरण में 12 अक्षर है चारों चरणों में कुल 48 वर्ण है। पाद के अन्त में यति होती है। यह वर्णिक छन्द है। यह छन्द अत्यन्त सुन्दरमय है। अतएव द्रुतविलम्बित वृत्त का दूसरा नाम सुन्दरी है। इसके प्रत्येक पाद में अन्त में यति होती है इसका ही नामान्तर सुन्दरी है।

द्रुतविलम्बित का दूसरा उदाहरण है-

इतरपाफलानि यदृच्छया, वितर तानि सहे चतुराननं
अरसिकेषु कवित्वनिवेदनं, शिरसि मा लिख ना लिख मा लिख॥

प्रकृत श्लोक के द्वितीय एवं चतुर्थ पाद के अन्तिम अक्षर लघुस्वर युक्त है। परन्तु द्रुतविलम्बित छन्द के अन्तिम गण रगण होता हैं उसकी आकृति (ऽ। ऽ) होती है। अर्थात् रगण के अन्तिम अक्षर गुरू स्वर युक्त होता है। अतएव प्रकृत श्लोक द्रुतविलम्बित के उदाहरण से गण्य कैसे होता है। इसके उत्तर तो पादान्त में छन्द पूर्ति के लिए प्रयोजन वश लघु वर्ण को गुरूता से भी स्वीकार होता है। अर्थात् छन्द पूर्ति के लिए लघु गुरू विपरिणाम तो होता हैं अतएव प्रकृतश्लोक में भी छन्द पूर्ति के लिए पादान्त वर्ण का गुरूत्व ग्रहण होता है। अतएव प्रकृत श्लोक द्रुतविलम्बित वृत का भी उदाहरण होता है।

पाठगत प्रश्न 24.3

13. रथोद्धता वृत्त का लक्षण क्या है?
14. रथोद्धता वृत्त से रचित श्लोक में कितने अक्षर होते हैं?
15. रथोद्धता में यति कब होती है?
16. वंशस्थ छन्द का लक्षण क्या है?
17. वंशस्थ के प्रत्येक चरण में कितने वर्ण होते हैं?
18. तोटक वृत का लक्षण क्या है।
19. तोटक के प्रत्येक चरण में कितने वर्ण होते है?
20. द्रुतविलम्बित का लक्षण क्या है?
21. द्रुतविलम्बित में यति कब होती है?
22. द्रुतविलम्बित का दूसरा नाम क्या है?

24.2.8 भुजंगप्रयात

काव्यमार्ग में यह अत्यन्त लोकप्रिय हैं क्योंकि इस वृत से श्लोक रचना अत्यन्त सरल होती है। इसमें समगण होते हैं। अतएव सुनने में मधुरता की अनुभूति होती है।

लक्षण- भुजंगप्रयातं भवेद् यैरश्चतुर्भि:।

व्याख्या :- यह जगती का ही कोई भाग है। इस वृत के प्रत्येक चरण में चार यगण होते हैं इस वृत्त के पाद के अन्त में यति होती है। यह समवृत्त है अत: प्रत्येक पाद में समान लक्षण होते है। इसके प्रत्येक पाद में 12 वर्ण हैं और चारों चरणों में कुल 48 वर्ण होते हैं यह वर्णिक

छन्द है।

उदाहरण में लक्षणसमन्वय :

।ऽ ऽ,। ऽ ऽ,। ऽ ऽ, । ऽ ऽ,। ऽ ऽ, । ऽ ऽ,। ऽ ऽ,। ऽ ऽ
पुरः साधुवद्भाति मिथ्या विनीतः, परोक्षे करोत्यर्थनाशं हताशः।
। ऽ ऽ,। ऽ ऽ,। ऽ ऽ,। ऽ ऽ, । ऽ ऽ, । ऽ ऽ,। ऽ ऽ, । ऽ ऽ
भुजंग प्रयातो पमं यस्य चिन्तं, त्यजेत्ता दृशं दुश्चरित्रं कुमित्रम्।।

इस श्लोक के प्रत्येक चरण में चार यगण है। पादान्त में यति है। अतएव यह श्लोक भुगंजप्रयात के उदाहरण में गण्य है। यह समवृत्त है। इसके चारों पादों में समान लक्षण हैं प्रत्येक पाद में 12 और कुल 48 वर्ण है।

24.2.9 वसन्ततिलका

काव्य जगत में वसन्ततिलका वृत्त प्रसिद्ध है प्राय: सभी कवि इस वृत्त से काव्य रचने की इच्छा करते हैं यह सुनने में मधुर है जिससे काव्य सौन्दर्य बढ़ता है।

लक्षण– ''उक्ता वसन्ततिलका तभजा जगौ गः।

व्याख्या– यह वसन्ततिलका वृत्त शक्वरी का एक भेद है। जिस वृत के प्रत्येक चरण में तभजा अर्थात तगण, भगण और जगण, जगौ अर्थात् जगण एवं एक गुरू, और 'ग' अर्थात् अन्त में एक गुरू होता है अर्थात् जिस वृत्त के प्रत्येक चरण में क्रमश: तगण, भगण, जगण, जगण एवं अन्त में दो गुरूवर्ण हो वह वसन्ततिलका छन्द होता है। इस वृत के प्रत्येक पाद के अन्त में यति होती हैं यह सभी समवृत्त है अर्थात् प्रत्येक पाद में समान लक्षण होता हैं। इसके प्रत्येक पाद में 14 वर्ण होते है। और पादचतुष्ट्य में 56 वर्ण या अक्षर होते हैं।

उदाहरण में लक्षण समन्वय

ऽ ऽ ।,ऽ । ।,। ऽ ।,। ऽ ।, ऽ ऽ, ऽ ऽ ।, ऽ। ।,। ऽ ।,। ।, ऽ ऽ,
फुल्लं वसन्त तिलकं तिलकं वनाल्याः, लीलापरं पिककुलं कलमत्र, रौति।
ऽ ऽ।, ऽ। ।,। ऽ।,। ऽ ।, ऽ ऽ, ऽ ऽ।,ऽ ।।,।ऽ ।,। ऽ ।, ऽ ऽ,
वात्येष पुष्पसुरभिर्मलायाद्रि वातो, याताहरिः समधुरां विधिना हताः स्मः।

इस प्रकृत श्लोक के प्रति चरण में क्रमश तगण, भगण, जगण और पुन: जगण है उसके बाद दो गुरू वर्ण है। अत: यह श्लोक वसन्ततिलका वृत्त का उदाहरण है, यह समवृत्त है। प्रत्येक पाद में समान लक्षण है इसके प्रत्येक पाद में 14 वर्ण है और चारों चरणों में 56 अक्षर हैं इस श्लोक के पाद के अन्त में यति है।

वसन्ततिलका के बहुत से नामान्तर विद्यमान है जैसे इस कारिका से प्राप्त होता है–

सिंहोन्नतेयमुदिता मुनि काश्यपेन। उद्धर्षिणीति गदिता मुनि सैतवेन।
रामेण सेयमुदिता मधुमाधवीति।।

टिप्पणी

अर्थात् वसन्ततिलका का काश्यप के मत में सिंहोन्नता नाम है, सैवत के मत में उद्धर्षिणी नाम और राम के मत में माघवी नाम है। वसन्ततिलका वृत्त के नामान्तर को जानकर समझते है कि शक्वरी कितनी प्रसिद्ध थी।

24.2.10 मालिनी

लक्षण- ''ननमयययुतेयं मालिनी भोगिलोंकैः।

व्याख्याः- यह वृत्त अतिशक्वती का कोई भाग है। ननमयययुता अर्थात् दो नगण, एक भगण, दो यगण से युक्त होता है। अर्थात् जिस वृत्त के प्रत्येक चरण में क्रमशः नगण, नगण, मगण यगण एवं यगण हो वह मालिनी वृत के रूप में प्रसिद्ध हैं। यहां भोगी अर्थात् भोग आठ होते हैं और लोकै अर्थात् लोक सात होते हैं। अर्थात् इस वृत में आठवें एवं सातवें अक्षर के बाद यति होती है यह समवृत्त है अतः चारों चरणों में समान लक्षण होते है प्रत्येक चरण में 15 अक्षर है अतः चारों चरणों 60 अक्षर है।

उदाहरण में लक्षण समन्वय -

।। ।,।। ।, ऽऽ ऽ,।ऽऽ, । ऽऽ,	। ।।, ।।।, ऽऽ ऽ,। ऽ ऽ, । ऽ ऽ,
अतिविपुल ललाटं, पीवरोरः कपाटं,	**सुघटितदश नोष्ठं व्याघ्रतुल्य प्रकोष्ठम्।**
।।।, ।। ।, ऽ ऽ ऽ, । ऽ ऽ,। ऽ ऽ,	।। ।,।।।, ऽ ऽ ऽ,। ऽ ऽ,। ऽ ऽ,
पुरुष मशनि लेखाल क्षमणं वीरलक्ष्मी	**रतिसुरभिय शोभिर्मालिनी वाभ्युपैति।।**

प्रस्तुत श्लोक के प्रत्येक चरण में क्रमशः नगण, नगण, मगण, यगण एवं यगण है इसमें प्रथम यति आठ पर और द्वितीय यति सात पर हैं अतः यहा मालिनी छन्द है। इसके प्रत्येक चरण में 15 अक्षर और चारों पादों में 60 वर्ण है। समवृत्त होने से चारों पादों में समान लक्षण हैं।

24.2.11 शिखरिणी

लक्षणः- ''रसैः रूद्रैश्छिन्ना यमनसभलागः शिखरिणी।

व्याख्या- यह अत्यष्टी छन्द का कोई भाग है। जिस वृत्त के प्रत्येक चरण में यमनसभलाग अर्थात् यगण मगण, नगण सगण, भगण तथा लघु और गुरू होता है वह शिखरिणी छन्द के नाम से प्रख्यात होता है। रस छः होते है, रूद्र ग्यारह होते है, अर्थात् शिखरिणी के प्रत्येक चरण में क्रमशः यगण, मगण, नगण, सगण, भगण तथा अन्त में लघु और गुरू वर्ण होते है। इसमें 6 एवं 11 यति होती है। यह समवृत्त है अतः प्रत्येक चरण में समान लक्षण होते है उसके प्रत्येक पाद में 17 वर्ण होते है। चारों चरणों में कुल 68 वर्ण होते है।

उदाहरण में लक्षणान्वय-

। ऽ ऽ, ऽ ऽ ऽ,	। । ।, । । ऽ, ऽ । ।, । ऽ
यदा किच्चिद्ज्ञोऽहं	**द्विप इव मदान्धः समभवम्,**

। ऽ ऽ, ऽ ऽ ऽ, । । ।, । । ऽ, ऽ । ।, । ऽ

तदा सर्वज्ञोऽस्मीत्यभवदवलिप्तं मम मनः॥

। ऽ ऽ, ऽ ऽ ऽ, । । ।, । । ऽ, ऽ । ।, । ऽ

यदा किं चित् किं चित् बुधजन सकाशादवगतम्,

। ऽ ऽ, ऽ ऽ ऽ, । । ।, । । ऽ, ऽ । ।, । ऽ

तदा मूर्खोऽस्मीति ज्वर इव मदो में व्यय गतः॥

इस श्लोक के प्रत्येक चरण में क्रमशः यगण, मगण, नगण, सगण भगण लघु तथा गुरू होते हैं अतः इस श्लोक में शिखरिणी छन्द हैं छठे एवं ग्यारहवे अक्षर के बाद यति है। यह समवृत्त है अतः पादचतुष्ट्य समान लक्षणों से युक्त है। इस श्लोक के प्रत्येक चरण में 17 वर्ण है तथा सम्पूर्ण श्लोक में 68 अक्षर है।

24.2.12 मन्दाक्रान्ता

लक्षणः- ''मन्दाक्रान्ता जलधिषडगैर्म्भौ नतौ ताद् गुरू चेत्''

व्याख्याः- मन्दाक्रान्ता वृत्त अत्यष्टी छन्द का कोई भाग है। जिस वृत्त के प्रत्येक चरण में **क्रमशः** मगण भगण होते हैं उसके बाद नतौ अर्थात् नगण व तगण होते हैं उसके बाद तात् अर्थात् तगण व दो गुरू वर्ण हो उसे मन्द्राक्रान्ता कहते हैं। यति के लिए कहते है जलाधिषडगैः अर्थात् छन्द शस्त्र में जलधिः समुद्र चार और नगैः से सात संख्या का बोध होता है। इस प्रकार मन्दाक्रान्ता छन्द के प्रत्येक पाद में क्रमश मगण, भगण, नगण, दो तगण, और अन्त में दो गुरू होते हैं तथा चार छः, सात पर यति होती है। यह समवृत्त है इसके प्रत्येक चरण में 17 वर्ण तथा कुल 68 वर्ण होते है।

उदाहरण में लक्षणान्वय-

ऽ ऽ ऽ, ऽ । ।,। ॥, ऽ ऽ । ,ऽ ऽ । , ऽऽ

कश्चित्कान्ताविरह गुरुणा स्वाधिकारात्प्रमत्ताः।

ऽ ऽऽ, ऽ॥,।॥, ऽऽ।, ऽऽ। ऽऽ

शापेना स्तंगमितमहि मावर्ष भेग्येण भर्तुः

ऽऽ ऽ, ऽ ॥,। । ।,ऽ ऽ। , ऽ ऽ।,ऽऽ

यक्षश्चक्रे जनक तनया स्नान पूर्णोद केषु।

ऽ ऽ ऽ, ऽ॥,। ॥,ऽ ऽ।, ऽ ऽ।,ऽऽ

स्निग्धच्छायातरुषु वसतिं राम गिर्याश्रमेषु॥

इस श्लोक के प्रत्येक चरण में क्रमशः मगण भगण, नगण तगण पुनः तगण और अन्त में दो गुरू वर्ण हैं इस में चौथे वर्ण के बाद, छठे अक्षर के बाद और सातवें अक्षर के बाद यति होती हैं अतः इस श्लोक में मन्दाक्रान्ता छन्द का लक्षण अन्वित होता है यह समवृत्त छन्द है इसके प्रत्येक चरण में 17 और कुल 68 वर्ण है।

टिप्पणी

24.2.13 शार्दूलविक्रीडित

काव्य मार्ग में शार्दूलविक्रीडित अत्यन्त प्रसिद्धतम छन्द हैं संस्कृत जगत में इस छन्द से अगणित श्लोक है।

लक्षणः- ''सूर्याश्वैर्मसजस्तताः सगुरवः शार्दूलविक्रीडितम्।''

व्याख्याः-यह वृत्त अतिधृति का कोई भेद हैं जिस के प्रति चरण में एक गुरू के साथ **मसजसतताः** अर्थात् **मगण, सगण, जगण, सगण,** और दो तगण होते हैं। और सूर्य बारह होते है एवं अश्व सात होते हैं अर्थात् शार्दूलविक्रीडित छन्द के प्रत्येक चरण में क्रमश मगण, सगण, जगण, सगण, दो तगण और अन्त में गुरूवर्ण होता है बारहवें एवं सातवें अक्षर के बाद यति होती हैं यह समवृत्त हैं अतः चारों पाद समान होते हैं इसके प्रत्येक पाद में 19 अक्षर होते हैं सम्पूर्ण छन्द में 76 अक्षर होते हैं।

उदाहरण में लक्षण समन्वय-

ऽ ऽ ऽ, । । ऽ, । ऽ।, ॥ ऽ , ऽ ऽ।, ऽ ऽ।, ऽ

या कुन्देन्दुतुषार हार धवला या शुभ्रवस्त्रवृता,

ऽ ऽ ऽ,। । ऽ,। ऽ ।,। ।ऽ , ऽ ऽ।, ऽ ऽ ।, ऽ

या वीणा वरदण्डमण्डितकरा याश्वेतपद्मासना।

ऽ ऽ ऽ , ॥ ऽ,। ऽ।, ॥ ऽ, ऽ ऽ।,ऽऽ। ,ऽ

या ब्रह्माच्युतशंकरप्रभृति भिर्देवैः सदा वदिन्ता,

ऽ ऽऽ, ॥ ऽ, । ऽ ।,॥ ऽ, ऽ ऽ ।, ऽ ऽ ।, ऽ

सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेषजाड्यापहा॥

इस श्लोक के प्रति चरण में क्रमशः मगण, सगण, जगण, पुनः सगण, उसके बाद दो तगण तथा अन्त में एक गुरू वर्ण हैं तथा 12वें 7वें अक्षर के बाद यति हैं। अतः यहां शार्दूलाविक्रीडित छन्द है। समवृत्त होने से चारों पाद समान लक्षण युक्त हैं इसके प्रत्येक चरण में 19 तथा चारों चरणों में कुल 76 अक्षर है। यह वर्णिक छन्द हैं।

पाठगतप्रश्न 24.4

23. भुजंगप्रयात का लक्षण क्या है?
24. भुजंगप्रयात रचित श्लोक में कितने अक्षर होते है?
25. वसन्ततिलका छन्द का लक्षण क्या है।
26. वसन्ततिलका छन्द के प्रति पाद में कितने अक्षर हैं?
27. काश्यप के मत में वसन्ततिलका का क्या नाम है?

28. मालिनी वृत का लक्षण क्या है?

29. मालिनी के प्रत्येक पाद में कितने अक्षर है?

30. शिखरिणी छन्द का लक्षण क्या है?

31. शिखरिणी के प्रत्येक पाद में कितने अक्षर हैं?

32. मन्दाक्रान्ता का लक्षण क्या है?

33. शार्दूलविक्रीडित का लक्षण क्या है?

पाठासार

संस्कृत साहित्य जगत में छन्द का प्रचुर प्रयोग दिखाई देता है। शकुन्तला आदि लौकिक काव्य में तथा वैदिक साहित्य में भी छन्द का प्रयोग हैं इस पाठ के प्रारम्भ में मात्रिक छन्द आर्यावृत्त का वर्णन किया गया हैं। आर्या के लक्षण उदाहरण एवं यति नियम को कहा गया है। मात्रिक छन्द का वर्णन करके अत्यन्त प्रसिद्ध इन्द्रवज्रा और उपेन्द्रवज्रा वर्णन हैं जिस वृत के प्रतिचरण में दो तगण एक जगण के साथ अन्त में दो गुरू वर्ण हो वह इन्द्रवज्रा छन्द होता है। पाद में अन्त में यति होती है। उपेन्द्रवज्रा में क्रमशः जगण तगण जगण और अन्त दो गुरू वर्ण होते हैं। शालिनी छन्द के प्रत्येक चरण में प्रथम मगण उसके बाद दो तगण तथा अन्त में दो गुरू वर्ण होते हैं चौथे व सातवें अक्षर के बाद यति होती है। रथोद्धता छन्द के प्रति पाद में क्रमश रगण, नगण और पुनः रगण तथा अन्त में लघु एवं गुरू वर्ण होकर ग्यारह वर्ण होते हैं तथा पाद के अन्त में यति होती हैं उसके बाद वंशस्थ छन्द का लक्षण कहते है जिस वृत्त के प्रत्येक पाद में जगण, तगण, जगण और रगण होते हैं वह वंशस्थ होता है। तोटक वृत के प्रत्येक चरण में चार सगण होते हैं तोटक के पाद के अन्त में यति होती है। द्रुतविलम्बित छन्द के प्रति चरण में क्रमशः नगण भगण भगण एवं रगण होते है। इसके प्रत्येक चरण में बारह वर्ण होते हैं चार यकारों अर्थात् जिस छन्द में चार यगण हो उसे भुगंजप्रयात कहते हैं जिस छन्द के प्रति चरण में क्रमश तगण, भगण, दो जगण और अन्त में दो गुरू वर्ण हो उसे वसन्ततिलका कहते हैं। इसके पाद में अन्त में यति होती है। उसके बाद मालिनी का लक्षण करते है जिस वृत के प्रति चरण में क्रमण दो नगण, तगण, और दो यगण होते हैं उसे मालिनी कहते हैं। जिस छन्द के प्रतिचरण में क्रमश यगण मगण, नगण सगण भगण और अन्त में एक लघु और एक गुरू होता है वह शिखरिणी होता है। इसमें छठे ग्यारहवें अक्षर के बाद यति होती है। मन्दाक्रान्ता छन्द के प्रत्येक पाद में क्रमश मगण, भगण, नगण, तगण, पुनः तगण तथा अन्त में दो गुरू वर्ण होते हैं। और जिस छन्द के प्रति चरण में क्रमश मगण, सगण, जगण पुनः सगण उसके बाद दो तगण है उसे शार्दूलविक्रीडित छन्द कहते हैं। इसमें 12वें एवं 7वे अक्षर पर यति होती हैं इस प्रकर संक्षेप में छन्दों की चर्चा प्रस्तुत की गई है।

आपने क्या सीखा

- विविध छन्दों के लक्षण एवं उदाहरणों को जाना।
- काव्यों में छन्दों को पहचानना जाना।
- छन्दों के भेद उपभेदों का ज्ञान प्राप्त किया।

पाठान्त प्रश्न

1. उदाहरण सहित आर्या छन्द का वर्णन कीजिए।
2. इन्द्रवज्रा छन्द का लक्षण व उदाहरण लिखिए।
3. उपेन्द्रवज्रा छन्द का लक्षण व उदाहरण लिखिए।
4. शालिनी छन्द का लक्षण व उदाहरण लिखिए।
5. रथोद्धता छन्द का लक्षण व उदाहरण लिखिए।
6. वंशस्थ छन्द का लक्षण व उदाहरण लिखिए।
7. तोटक छन्द का लक्षण व उदाहरण लिखिए।
8. भुजंगप्रयात छन्द का लक्षण व उदाहरण लिखिए।
9. वसन्ततिलका छन्द का लक्षण व उदाहरण लिखिए।
10. द्रुतविलम्बित छन्द का लक्षण व उदाहरण लिखिए।
11. मालिनी छन्द का लक्षण व उदाहरण लिखिए।
12. शिखरिणी छन्द का लक्षण व उदाहरण लिखिए।
13. मन्दाक्रान्ता छन्द का लक्षण व उदाहरण लिखिए।
14. शार्दूलविक्रीडित छन्द का लक्षण व उदाहरण लिखिए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

24.1

1. मात्रिक छन्द।
2. जगण।

3. विषमवृत।

4. त्रिशंत् (30)।

5. सप्तविंशति (27)।

24.2

6. स्यादिन्द्रवज्रा यदितौ जगौ गः।

7. ग्यारह।

8. समवृत्त।

9. उपेन्द्रवज्रा जतजास्ततो गौ।

10. ग्यारह।

11. शालिन्युक्ता म्तौ तगौ गोखब्लिलोकैः।

12. ग्यारह।

24.3

13. रान्नराविह रथोद्धता लगौ।

14. 44।

15. पाद के अन्त में ।

16. जतौ तु वंशस्थ मुदीरितं जरौ।

17. 12।

18. इह तोटकमम्बुधिसैः प्रथितम्।

19. 12।

20. द्रुतविलम्बितमाह नभौ भरौ।

21. पाद के अन्त में ।

22. सुन्दरी।

24.4

23. भुजंगप्रयातं भवेद्यैश्चतुर्भिः।

24. 48।

25. उक्ता वसन्ततिलका तभजा जगौ गः।

26. 14।

27. सिंहोन्नता।

28. ननमयययुतेयं मालिनी भोगिलोकैः।

29. 15।

30. रसैः रूद्रैश्छिन्ना यमनसभलागः शिखरिणी।

31. 17 ।

32. मन्दाक्रान्ता जलधिषडगैम्भौं नतौ ताद् गुरू चेत्।

33. ''सूर्याश्वैर्मसजस्तताः सगुरवः शार्दूलविक्रीडितम्।